शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में चित्रित पात्र 'रामदास' की त्रासदी

डॉ.गीता रा.दोडमणी
राजाराम महाविद्यालय
कोल्हापूर, महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

श्रीलाल शुक्ल हिंदी साहित्य में व्यंग्य लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से शुक्लजी ने अपने जीवन में आये विविध अनुभवों को बडी तन्मयता से व्यक्त किया है। वे अनेक भाषाओं के जानकार थे। इसिलिए उनके साहित्य में हिंदी, अंग्रेजी,संस्कृत, अवधी आदि भाषाओं का प्रभाव भी दिखायी देता है। श्रीलाल शुक्ल हिंदी साहित्य में उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार,आलोचक,व्यंग्य साहित्यकार आदि के रूप में जाने जाते हैं। 'राग दरबारी' उपन्यास के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्हें पद्मभूषण उपाधि से नवाजा गया और सन 2009 का ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास के अंतर्गत शुक्ल जी ने स्वतंत्रता के बाद भारतीय ग्रामों की गरीबी ठाकुरों की अहंकारवादी प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है। इस में शोषक तथा शोषित दोनों पात्रों का समावेश दिखाई देता है। ग्रामीण तथा शहरी पात्र भी मौजूद हैं। रामनाथसिंह, बडे ठाकुर आदि गाँव के पात्र हैं। गाँव के रामदास के मित्र गरीबी के कारण चोरी में व्यस्त रहते हैं। रामदास के शहरी मित्रों में राजधर, श्याममोहन, रामानुज आदि पात्र हैं जिन्हें पैसों की चिंता नहीं है। पात्रों के संवाद पात्रों के अनुसार चुटीले हैं जो कथानक को गति प्रदान करते हैं। इसमें रामदास गरीब लड़का है, लेकिन बहुत ही गुण संपन्न तथा होनहार है। फिर भी उसे कुछ प्राप्त नहीं होता। कुछ पाने के लिए वह शहर जाता है और निराश होकर फिर वापस अपने गांव आता है। यह उसकी सबसे बडी त्रासदी है, जिसे चित्रित करने में लेखक पूरी तरह से सफल हुए हैं।

भूमिका

श्रीलाल शुक्ल ने 1957 से लेकर 2001 तक अनेक उपन्यासों की रचना की। उनका पहला उपन्यास है 'सूनी घाटी का सूरज'। उन्होंने अपने उपन्यासों में जीवन के विविध अनुभवों को तन्मयता से व्यक्त किया है। श्रीलाल शुक्ल को संगीत के प्रति भी प्रेम था। शुक्ल जी भले ही पैसों से गरीब क्यों न हों, लेकिन उन पर हुए संस्कार गरीब नहीं थे। माता-पिता और चाचा ने उन पर बहुत अच्छे संस्कार किए थे। स्वयं पर हुए संस्कार तथा शिक्षा से प्राप्त ज्ञान से उन्होंने बहुत कुछ हासिल किया और उच्च पदों पर काम किया। उनके उपन्यासों से ज्ञात होता है कि वे गरिबों के जीवन को कितने नजदीकी से जानते हैं। 'सूनी घाटी का सरज' उन्हीं उपन्यासो में एक है जिसमें एक गरीब लड़के का चरित्र उभरकर सामने आता है। गरीब रामदास जिद्दी है तथा बहुत सारे कष्टों को सहते हुए अपनी शिक्षा पूरी करता है। लेकिन पग-पग पर उसका शोषण होता है। यहाँ तक कि उसके अपने गुरू भी उसका शोषण करते हैं। घर से लेकर गुरु तक के लोगों का अन्याय उसे सहना पडता है। अंत में वह निराश हो जाता है और शहर छोडकर गाँव में वापस आता है। यही उसकी सबसे बडी त्रासदी है। विद्वानों ने त्रासदी को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया किया है। अरस्तू ने त्रासदी की परिभाषा देते हुए कहा है, "त्रासदी किसी गंभीर

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्वतःपूर्ण निश्चित आयाम से युक्त कार्य की अनुकृति है।"1

जोजेफ एडिसन भी इस संबंध में लिखते हैं, "त्रासदी का मुख्य उद्देश्य दर्शकों के मन में भय तथा करूणा का संचार करना है। यदि हम सज्जन पात्रों को सदैव सुखी और आनंदपूर्ण बनाते रहेंगे तो हम कभी भय करूणा जाग्रत करने में सफल नही होंगे: क्योंकि, जब-हम जानते हैं कि पात्रों को चाहे कितने ही कष्ट सहने पडे अन्त में तो वे अवश्य सुखी और धनधान्य से पूर्ण होंगे। हमारे मन में न तो भय उत्पन्न होगा और न करूणा, वरन् हमें एक प्रकार का सन्तोष होगा कि अन्त तो आनन्दपूर्ण हुआ चाहे आदि कैसा भी क्यों न रहा हो। इसलिए प्राचीन लेखकों ने सांसारिक जीवन के अनुरूप ही अपने पात्रों का चित्रण किया है। उन्होंने सज्जन पात्रों को कभी सुखी तो बनाया परन्तु साधारणतः दुःखी ही रहने दिया।2

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि त्रासदी में दुःख के साथ-साथ सुख का भी अनुभव होता है और आनंद आता है। कथा के अंत को सुखद बनाने के लिए कथा में करूणा, दुःख का होना भी आवश्यक है, जिससे पाठकों को समाधान मिलता है और लेखक का मुल उद्देश्य पूर्ण होता है। सुख की अनुभूति में जो आनंद है वही आनंद करूणा भावों में उत्पन्न होता है यही त्रासदी है।

प्रस्तुत उपन्यास 'सूनी घाटी का सूरज' में चित्रित पात्र 'रामदास' की त्रासदी उभरकर सामने आती है।

रामदास की त्रासदी

'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में प्रमुख पात्र के रूप में रामदास है। 'रामदास गरीब लडका है। गरीब होने के कारण उसको बहुत सारे संकटों का सामना करना पडता है। उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक 'रामदास ' को हर संकट का सामना करते हुए चित्रित किया है। कथा को विस्तारित रूप देने के लिए कुछ अन्य पात्रों को भी जोड दिया है। कथा में प्रवाह है, त्रासदी का मूल उद्देश्य कथा में पाया जाता है, क्योंकि उपन्यास में चित्रित व्यथा, पीडा, और वेदना आदि कारण पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। ऐसा महसूस होता है कथा के नायक जैसे हम ही हैं।

अरस्तू के अनुसार "त्रासदी वर्णनात्मक न होकर अभिनयात्मक होती है तथा इसमें करूणा तथा त्रास के उद्रेक के द्वारा पूनः मनोविकारों का उचित विवेचन किया जाता है।"3 अरस्तू का यह मत इस उपन्यास का प्रमुख पात्र 'रामदास' पर लागू होता है। उपन्यास का परिवेश ग्रामीण तथा शहरी दोनों हैं। करूणा, त्रास, व्यथा, पीडा, वेदना, शोकादि सभी की अभिव्यंजना इस उपन्यास के पात्र रामदास में चित्रित हुई है। वह इस प्रकार बताई जा सकती है।

बचपन की त्रासदी

रामदास जाति से ठाकुर खानदान का था लेकिन गरीबी के कारण उसे बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पडा। रामदास गाँव की पाठशाला में पंडित द्वारा पढते थे लेकिन गाँव की लछमिनिया कोरिन पंडित जी से गर्भवती होने के कारण लाजवश पंडितजी गाँव छोड़ कर भाग जाते हैं। फिर पंडितजी के जाते ही गाँव की पाठशाला टूट जाती है। यह सूचना सुनकर आसपास के स्कूलों के अध्यापक रामदास के गाँव जाकर अपनी पाठशाला में बच्चों की भर्ती करवाने के लिए बच्चों को समझाते हैं तथा उनमें बताशे और किशमिश भी बांटते हैं। रामदास भी तेज विद्यार्थी होने के कारण स्कूल में पढने जाता है लेकिन उन स्कूलों में साल के बीच में

तीन पैसा फीस भरनी थी जो रामदास के पास नहीं थे मजबूरन रामदास को स्कूल छोडना पढता है और गाँव में रहकर भैसें चराना पड़ती है।

बचपन में ही माँ का देहान्त होने के कारण पिताजी के प्रेम में पलता रहा। गरीबी के कारण रामदास पढ नहीं पाता भैसें चराने जाता है तो पिताजी पूछते हैं - ''क्यों रे रमदस्सा, तेरा मन इसमें लगेगा?'' मैंने साफ कहा - ''नही तो काका। मुझे स्कूल भेज दो। अगर न भेजा तो मुझे गिनती-पढाई सब भूल जायेंगे ।''4 इससे स्पष्ट होता है कि रामदास की पढने कि जबरदस्त इच्छा थी। लेकिन बेबसी के कारण काका उसे भैसे चराने के नियम बताते है। तो रामदास फिरसे बोल उठता है- ''काका, मुझे स्कूल जाने दो, मैं पढ-लिखकर पैसा कमाऊंगा और तुम्हारा कर्ज पाट दूंगा ।''5

छोटका के कहने से नन्हूसिंह की देखभाल करता हुआ ग्यारह वर्ष की अवस्था में प्राइमरी स्कूल में रामदास फिरसे भरती हो जाता है। कुछ दिनों बाद काका के हाथ कोल्हू में फँसकर पिस जाते हैं और फिर एक बड़ा संकट रामदास पर आ गिरता है। काका के गुजर जाने के महीना-भर बाद स्कूल के प्रधानाध्यापक मुंशी नवरतन लाल रामदास को शरण देते हैं। उसे इसके लिए मित्र अमजद अली की सहायता मिलती है। लेकिन यहाँ भी उसका बहुत शोषण होता है। मुंशी नवरतन लाल उसे अपने घर में तो रख लेते हैं लेकिन शिक्षा से ज्यादा काम ही लगाते है। नवरतनलाल के पिता बाबू मुसद्दीलाल उसे बुलाकर कहते हैं-'' सुनो बेटे, आज से तुम हमारे हेड खिचमिचगार बनाए गए। बस, कुछ कामकर डालने हैं और फिर बाबू बनकर पढाई करनी है।''6 मास्टरजी के घर में रहकर भी पूरा दिन स्कूल में जाने की इजाजत नहीं मिलती। सुबह से लेकर दोपहर तक काम करना पड़ता फिर स्कूल जाने की अनुमति मिलती। जाड़ो के दिनों में भी ढंडी में उठकर उसे पानी भरना पडता था। इतना काम करने के बावजूद भी जडावनवाली हमेशा बडबडाती रहती थी। दिनभर पढाई के लिए समय न मिलने के कारण जब रामदास रात को पढने बैठता तो जडावनवाली बडबडाती है- ''कोन लालटेन को गैस-जैसा जला रहा है ? चिमनी चिटक जाएगी ।''7 ऐसे समय में रामदास धीमी बत्ती को और धीमी बनाकर आँखें मिचमिचाते हुए सिर झुकाकर फिर पढना आरंभ कर देता। इस प्रकार विभिन्न संकटों का सामना करते करते रामदास अव्वल दर्जे में मिडिल स्कूल पास करता है। फिर मुंशी नौरतनलाल ने उसे आगे पढने के लिए दो चिट्ठियों के साथ क्षत्री स्कूल में भर्ती होने के लिए कानपूर भेंज देते हैं।

पैसों की समस्या

स्कूल के रामदास को पाच रू सरकारी वजीफा मिलता और उसकी फीस माफ कर दी गयी। लेकिन उसे पैसो की समस्या के कारण गंदगी में रहना पडता है। उसे मिलनेवाले सात रूपयो में आठ आना मकान किराया और बारह आना स्कूल के खेल-कूद आदि की फीस, आदि भर देना पडता था। हेड मास्टर ठाकूर अंबिकेश सिंह उसे पुत्रवत मानने लगे। उसकी मेहनत और होशियारी के कारण उसे विविध कामों से जोड देते हैं जिससे उसे कुछ पैसें मिल जाते हैं ।

विश्वविद्यालयीन जीवन की व्यथा

बी. ए. परीक्षा में रामदास को प्रथम श्रेणी मिलती है। ठाकूर अंबिकेश सिंह शोफर के साथ भागी हुई ठाकूर राजेश्वरसिंह की बेटी बेबी से शादी करने का प्रस्ताव रखते हैं। इन्कार करने पर दोंनो भी रामदास से नाराज होते हैं । प्रोफेसर सिन्हा जो अनिता के पिता और रामदास के गुरू थे रामदास

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

से अर्थशास्त्र की किताब लिखवाते हैं लेकिन उस किताब को जब छपवाते हैं तो रामदास के बजाय खुंद का नाम लेखक के रूप में डाल देते हैं। इसके बाद रामदास स्वतंत्र रूप से लिखने की बात कहता है-'' यह अच्छा हुआ कि अब मैं स्वतंत्र होकर सोचूंगा। स्वतंत्र होकर लिखूंगा । पहले चार ग्रंथ अर्थशास्त्र के सिद्धान्तो पर, फिर पांचवा भारतीय ग्रामों की आर्थिक स्थिति पर। यह ग्रंथ विश्व-विदित बनाएगा। छठा ग्रंथ होगा अपनी आत्मकथा जो परिस्थितियों के गोरखधंधों को तोडकर आत्मबल पर आगे बढा, विपत्तियों ने जिसे डराया नहीं जटिलतायें जिसे उलझा नहीं सकीं, उसकी आत्मकथा।''8 रामदास जीवनभर जिंदगी से जूझता रहा। अपने सिद्धातों में जीता रहा। पुस्तक पर काम करते हुए उसे बहुत शान्ति मिलती थी। उसने बहुत सी पुस्तके लिखी लेकिन लेखक के स्थान पर किसी दूसरे का नाम डालना पडा। इस प्रकार की त्रासदी से रामदास को गुजरना पडता है।

नौकरी की चिंता

रामदास विविध माध्यमों से पढाने का काम भी करता है लेकिन ज्यादा उम्र होने के कारण कहीं सरकारी नौकरी नहीं मिलती। उसके सभी मित्रों को नौकरियाँ मिली लेकिन रामदास को नौकरी नहीं मिलती तो रामदास कहता है-''मैं एक प्रताडित पिता के अनुभवों को अपनी शिक्षा, अपने तर्क और अपने अनुभवों के सहारे किसानों के कर्ज की समस्या पर शोध करने में उतार रहा हूँ।''9 पूरी तरह से काबिलियत होते हुए भी रामदास को नौकरी नहीं मिलती इससे बडी त्रासदी ओर क्या हो सकती है।

संस्मरण

रामदास ने अपनी बीती हुई जिंदगी के संस्मरण के कुछ अंश लिखे हैं सत्या उस पर बीती बातो को जानने के लिए उत्सुक होने के कारण रामदास उसे क्रम के अनुसार पूरा करता है। अनिता उसे वकील बनाना चाहती थी। व्यावसायिक नौकरियाँ करने के लिए बता रही थी लेकिन रामदास ऐसा नहीं करता है। रामदास इन सारी बातों से निराश हो जाता है। शीशे में अपना चेहरा देखता है ''मत्था बहुत कम चौड़ा है। आँखें गड्ढे में हैं और छोटी हैं। नाक कुछ बडी है। रंग सांवला है। गरदन पतली है। उसकी अस्थियाँ उपर से दीख पडती हैं। कुल मिलाकर ऐसे चेहरे को न सुंदर कहा जा सकरता है, न असुंदर। यह एक अति साधारण चेहरा हैं।''10 अनजाना सही लेकिन सत्या के विषय में रामदास बहुत ही परिश्रमी और योग्य विद्यार्थी होकर भी उसे अंत में कुछ नहीं मिलता है जिससे वह नाराज, हताश होकर अपने गांव वापस जाता है और रनपुरा में हायस्कूल के हेडमास्टर के रूप में नौकरी करता है। यह क्षेत्र पहाडी जंगल से युक्त और चैतुओं का है। हाँ पानी, घास, जंगल और निस्सीमता सारे मानवीय त्तत्वों को समेटे हुए हैं।

निष्कर्ष

हम यह कह सकते हैं कि एक गरिब होनहार लडका अनेक समस्याओं का सामना करते हुए अपने परिश्रम के बलबूते आगे बढता है लेकिन काबिलियत होने के बावजूद सभी उसका शोषण ही करते हैं जिससे निराश होकर रामदास वापस अपने गांव आता है। युग का आकर्षण अतीत की प्रताडना और वर्तमान की निराशा से त्रस्त रामदास ही सूनी घाटी का सूरज बन जाता है। इस प्रकार रामदास के जीवन की त्रासदी को उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक ले आने में श्रीलाल शुक्लजी को सफलता मिली है। जिसमें पाठक भी पूरी तरह भावना के वश होकर दुःखी

होते हैं ओर लेखक अपने उद्देश्य तक पंहुच पाता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1.प्रो. हरिमोहन, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की पहचान', वाणी प्रकाशन, 21-9, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र. सं 2008, पृ.114

2.डा . शर्मा कृष्णदेव, 'भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विनोद पुस्तक मन्दिर प्रकाशन, आगरा, चतुर्थ सं 1986/87. पृ.94

3.गुप्त गणपतिचंद्र, 'भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त', लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, सं 2003, पृ.185

4.शुक्ल श्रीलाल, 'सूनी घाटी का सूरज', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली तीसरा सं 1991 पृ. 25

5.वही पृ.26

6. वही पृ.36

7. वही पृ.46

8 वही पृ.97

9. वही पृ.111

10 वही पृ.118